भारत छोड़ो आन्दोलन में मधुबनी जिला की सहभागिता

नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला'

मिथिलांचल की हृदयस्थली मधुबनी यदि अपनी सभ्यता, संस्कृति भाषा, साहित्य, विद्वता चित्रकला एवं लोक कला के लिए प्रसिद्ध है तो गुलामी की प्रताड़ना से जब सहिष्णुता की शक्ति जाती रही और उसने अपने धैर्य खो दिए तो यह क्षेत्र भी स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला में एक शोला बनकर खड़ा हुआ। इस मिट्टी के सपूतों की चेतना विद्या से विद्रोह की ओर मुड़ी। भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रभाव संपूर्ण भारत के स्तर पर व्यापक रूप से पड़ा। मधुबनी क्षेत्र की जन चेतना ने भी इस आन्दोलन में अपनी हिस्सेदारी निभायी तथा इनक्लाव के लिए अपनी मुट्ठियों को ऊपर उठाया और जिन्दाबाद के स्वरों को निनादित किया।

''भारत छोड़ो आन्दोलन'' के समय मिथिलांचल में जो संकल्प और उत्साह दृष्टिगोचर हुआ वह भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में स्वर्णाक्षर में अंकित करने योग्य है। वस्तुतः मिथिला में यह जोश और आक्रोश पटना सचिवालय हत्या कांड के पश्चात चरम सीमा पर पहुँच गई थी। पटना में दिनांक 11 अगस्त के अपराह्न में जनता की अपार भीड़ एकत्र होकर वहाँ से सरकारी सचिवालय पर राष्ट्रीय झंडा फहराने के लिए अग्रसर हुई। सबसे आगे विद्यार्थियों का दल पंक्तिबद्ध होकर चल रहा था। भीड़ सचिवालय के सामने पहुँच गयी । पटना के अंग्रेजी जिला मजिस्ट्रेट अर्चक ने उन निहत्थों पर गोलियों की बौछार करने की आज्ञा दी। वहाँ 13 अथवा 14 राउन्ड गोलियाँ चलीं, जिनसे 7 विद्यार्थियों की मृत्यु घटनास्थल पर ही हो गयी, लगभ 25 व्यक्ति बुरी तरह घायल हुये और साधारण चोट अनेक लोगों को लगी। उस दिन स्वतंत्रता की बलिदेवी पर जिन विद्यार्थियों का बलिदान हुआ, उनके नाम निम्नांकित हैं– 1. उमाकान्त प्रसाद सिंह, 2. रामानंदन सिंह, 3. सतीश प्रसाद झा, 4. जगपति कुमार, 5. देवीपद चौधरी, 6. राजेन्द्र सिंह तथा 7. रामगोविन्द सिंह । अल्प वयस्क विद्यार्थियों के उपर्युक्त बलिदान के समाचार ने संपूर्ण बिहार प्रदेश के युवकों के हृदय में विदेशी शासन के प्रति प्रतिशोध की आग प्रज्वलित कर दी। विद्यार्थियों के अतिरिक्त साधारण जनता भी बौखला उठी और उनकी सहानुभूति एवं सहयोग छात्र समुदाय को सभी स्थानों में मिलने लगा। आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया। जिन लोगों से विदेशी शासन की सहायता मिलती थी, उनके प्रति भी यदा-कदा आंदोलनकारियों का कड़ा रुख परिलक्षित हुआ। शासन को शिथिल बना देने के विचार से उनलोगों ने रेल की पटरियाँ उखाड़ दीं, टेलीफोन एवं टेलीग्राफ के तार काट डाले, आरक्षियों के थाने पर आक्रमण किया और कहीं-कहीं उसमें आग भी लगा दी तथा डाकघरों और अन्य सरकारी भवनों एवं कार्यालयों पर अधिकार कर लिया। कई स्थानों पर शासन यंत्र के संचालकों के साथ उनका संघर्ष हुआ। जहाँ आंदोलनकारियों ने उन्हें नीचा दिखाया। कांग्रेस अथवा उसके नेताओं के कार्यक्रम में उपर्युक्त प्रकार की कार्यवाही का समावेश नहीं था। लगभग सभी नेता बंदी-गृह में बंद कर दिये गये थे। बाहर कोई जनता का पथ-प्रदर्शक नहीं था।

सरकार के दमन-कार्य से उत्तेजित जनता के मन में जैसा आया, वह वैसा करने लग गयी। देखा-देखी उस प्रकार की कार्यवाही सभी स्थानों में होने लगा।

कांग्रेस समिति ने यह भी साफ कह दिया कि जो जन-आन्दोलन होगा उसका लक्ष्य यह नहीं है कि कांग्रेस के हाथ में हुकूमत आ जाए, जब हुकूमत मिलेगी, हिन्दुस्तान की सारी जनता को मिलेगी।

इस विषम परिस्थिति में जब कि अधिकांश नेता कारागृह में थे, जनता ने स्वविवेक से लड़ाई छेड़ दी।

मिथिला का केन्द्र मधुबनी राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम का गढ़ था। यहीं से स्वाधीनता संग्राम का दिशा-निर्देश जिले के कोने-कोने में पहुँचाया जाता था।[2] वर्त्तमान राजनगर, पण्डौल और रहिका थाना मधुबनी थाना का ही अंग था। मधुबनी का वर्त्तमान खादी भण्डार आंदोलनकारियों का मुख्य अड्डा था। श्रीलक्ष्मी नारायण मतन मंत्री खादी भण्डार के साथ-साथ सात सौ भंडार कार्यकर्त्ता राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध में हाथ बंटा रहे थे। इस जिला में आन्दोलन का प्रथम श्री गणेश जयनगर से हुआ। जयनगर के छात्रों एवं स्थानीय कार्यकर्त्ताओं में पं० गुलाब झा, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री पलट चौधरी उर्फ पटल गोआर एवं श्री महावल कुंवर के नेतृत्व में जुलूस निकला जिसमें हजारों ने भाग लिये। हाथ में तिरंगा, माथे पर गाँधी टोपी, अजीबोगरीब जोश, मर मिटने की तमन्ना लिये ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' सिंहनादी नारा से जयनगर गुंजायमान हो रहा था। जयनगर के प्रदर्शनकारियों को जिस क्रूरता से दबाने का सरकारी प्रयास हुआ था, उसका जातीय प्रभाव जिला भर की जनता पर पड़ा। शहीद नथुनी साहु की शहादत उनके हृदय को आन्दोलित कर रहा था। मधुबनी[3] शहर और उसके आसपास के इलाके के विद्यालयों के छात्रों ने एक बड़ा जुलूस निकाला एवं नारे लगाये। 10 अगस्त, 1942 को चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज[4] और मेडिकल कॉलेज, दरभंगा में भी विद्यार्थियों ने एक बड़ा जुलूस निकाला[5] मुजफ्फरपुर में इसी दिन विशाल जुलूस निकाला गया। जी० वी० वी० कॉलेज[6] 'जिला स्कूल' मारवाड़ी स्कूल, तिरहुत टेकनीकल इंस्टीच्यूट आदि में भी हड़ताल रही और राष्ट्रीय झंडे फहराये गये। पुलिस के द्वारा बार-बार प्रहार किये जाने पर भी छात्रों ने ट्रेजरी गार्ड के सामने यूनियन बैंक के स्थान पर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया।[7] 11 अगस्त, 1942 को सुबह से ही दरभंगा और लहेरियासराय के स्कूली और कॉलेजों के विद्यार्थी शहर में घूमते हुए लहेरियासराय समाहरणालय के सामने प्रदर्शन करने के लिए अगस्त क्रान्ति का नारा लगा रहे थे। लगभग आधे घंटे तक ऐसा दृश्य रहा और लगातार ''अंग्रेजों भारत छोड़ दो'' इन्कलाब, जिन्दाबाद, पुलिस हमारा भाई है के नारे बुलन्द होते रहे।[8] ठीक उसी समय जयनगर[9] के श्री अयोध्या प्रसाद ने देखा कि गंगा सिंह, सी० आई० डी० (पुलिस) जनता की भीड़ में ढेला फेंक रहा है और सादे वेश में पुलिस से फेंकवा रहा है। लाठी चार्ज करने वाले पुलिस के ऊपर उसे उत्तेजित करने के लिय तथा भीड़ पर दोष मढ़ने के लिये वह हाँ, हाँ चिल्लाते ही रहे कि जनता की ओर से जबाबी ढेले आने लगे। फिर तो ढेलों की झड़ी सी लग गयी। पुलिस को चोट आयी, और वहाँ का समा ही बदल गया

और आगे बढ़ते विद्यार्थियों को चोट आयी। लाठियाँ बरसने लगी। कितनों के सिर फटे, कितने की अंगुलियां टूटी और कतिपय सत्याग्रही वहीं बेहोश होकर गिर गये। लोग भाग खड़े हुए। फिर पुलिस कुछ छात्रों को गिरफ्तार करके लौट गयी। भीड़ लाठी चार्ज के कारण बिखर गयी और आगे नहीं बढ़ सकी।

मधुबनी में भी 12 अगस्त, 1942 से तोड़ फोड़ की प्रक्रिया का आरंभ किया गया एवं संपर्क सूत्र तोड़े जाने लगे। बेनीपट्टी और खजौली उसके प्रधान क्षेत्र रहे। मकरमपुर निवासी यमुना सिंह ने सर्वप्रथम तार काट कर तोड़-फोड़ का श्री गणेश किया। खजौली ने इसका क्षेत्र बढ़ाया । रेलवे पुल तोड़ा गया, रेल की पटरी उखाड़ी गयी। नरार में डिस्ट्रीक्ट बोर्ड का पुल तोड़ा गया। कलुआही पुल जब तोड़ा जा रहा था तब जयनगर से लौटते हुए एस० डी० ओ० साहब वहाँ पहुँचे। लोगों ने उनकी मोटर तोड़ दी, पर एस० डी० ओ० के शरीर को आँच नहीं पहुँची। 13 अगस्त को आन्दोलन जयनगर में चरम सीमा पर पहुँच गयी। वहाँ आरंभ से ही जनता में उत्साह रहा, जो दिन-दूना, रात-चौगुना बढ़ता गया। 12 अगस्त को बाजार वालों और विद्यार्थियों ने शहर भर में धूमधाम से प्रदर्शन किया। जब वे थाने के पास पहुँचे तब पुलिसवालों ने उनपर लाठी चार्ज किया, बड़ी समसनी फैली, 13 अगस्त को पण्डौल, मधुबनी और जयनगर के विद्यार्थी वहाँ इकट्ठे हुए और बहुत बड़ा जुलूस लेकर थाना पर पहुँचे। वे थाने पर झंडा फहराना चाहते थे पर पुलिस मानती न थी। इसके लिए दोनों ओर से धक्कम-धक्का हुआ जिसे देखकर दरोगा डर गया और उसने पिस्तौल से गोली चलायी। गोली रामलखन यादव की बाँह को छेदती हुई नथुनी साहु की छाती में घुस गयी जो तत्काल शहीद हो गया । उसकी लाश को पुलिस वाले घसीट कर थाने में ले गये और बार-बार माँगने पर भी जनता को नहीं दिया। इसे जनता बर्दास्त न कर सकी, प्राणों पर खेल थाने में जनता घुस गयी और लाश को पुलिस से छीन लिया। फिर तो बाजे-गाजे के बीच शहीद की अर्थी उठी, उसका दाह-संस्कार हुआ और संस्कार भूमि पर तिरंगा झंडा गाड़ दिया गया जो शहीद की आत्मा से रोशनी की तरह निकलकर लहरा रही थी।

तारीख 15-16 अगस्त से कहीं कहीं पुलिस की पेट्रोलिंग शुरू हो गयी थी। 19 अगस्त को ऐसा ही पुलिस का जत्था सकरी में एक डिप्टी मजिस्ट्रेट के मातहत आया। स्वामी केवलानन्द राघोपुर की मदद से कुछ युवकों ने दो राइफल छिन लिया। एक राइफल का संगीन हातिम अली निकालकर भागे और चर्खा संघ खादी भंडार में छिपा रखा। वह वहाँ काम करते थे। 20 अगस्त को दो मीटरपर सेल्सबरी जिला जज की अध्यक्षता में कुछ बंदूक की खोज में सकरी खादी भंडार के सामने आये। सशस्त्र फौज को देखकर भण्डार वाले डर गये और अन्दर घुसकर केबाड़ बंद कर ली। टेमियों ने अन्दर जाने के लिए किबाड़ को कई बार धक्का लगाया। उसके नहीं खुलने पर उत्तर तरफ से जो आंगन में जाने का रास्ता था उसकी किबाड़ की जंजीर को गोली से तोड़कर वे सब अन्दर घुस गये। हातिम अली और कैलासबिहारी मिश्र ने पश्चिम वाले घर को किबाड़ के भीतर दाब रखा था क्योंकि उसमें सिटकनी नहीं थी। उस किवाड़ परसेल्सबरी ने धक्का मारा और झोंक में दोनों

पर गिर पड़ा। हातिम खान के हाथ में संगीन थी जिससे उन्होंने सैल्सबरी पर प्रहार किया। सैल्सबरी को घाव लगा, पर बहुत मामूली। उसने उसी संगीन को छीनकर हातिम खाँ पर प्रहार किया और उठकर उन दोनों पर जो अभी पड़े हुए थे फायर करने का आदेश दिया, कई गोलियाँ चली हातिम अली तो तत्काल चल बसे पर कैलाश बाबू घायल होकर बेहोश हो गये थे। होश आने पर उन्होंने पानी मांगा, किन्तु पानी उन्हें नहीं दिया गया। लाश को दरभंगा ले जाया गया, दूसरे दिन मातम बनायी गयी। बेनीपट्टी में श्री जयदेव लाल दास, बहेड़ा में राजगिरि सिंह, तृप्ति नारायण झा, रामनारायण और कुलानन्द सिंह, बिरौल में विन्देश्वरी प्रसाद सिंह विद्यालंकार और सुन्दर सिंह, मधेपुर में श्री सूरत झा और अनन्तनारायण झा के नेतृत्व में लोगों ने सरकारी कार्यालयों पर कब्जा जमाने का प्रयास किया। इस प्रयास में आंदोलनकारियों का नेतृतव श्रीमती जानकी देवी जो खरारी कीं थी, कर रही थीं। श्रीमती जानकी देवी और श्री कृष्णा देवी ने न सिर्फ बहेरा थाने पर राष्ट्रीय तिरंगा फहराया बल्कि थाना के सभी अधिकारियों को थाना से बाहर निकाल कर दो दिनों तक थाना को अपने अधिकार में रखा। इस काम में श्री रामवरण सिंह एवं बहेड़ा और हथौरी के सैकड़ों नौजवानों से अपने शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन किया। श्रीमती कृष्णा देवी आजादी के बाद इसी क्षेत्र से तीन बार बिहार विधानसभा सभा की सदस्या भी निर्वाचित हुई।

मधुबनी में 15 अगस्त, की शाम को एक बड़ा जुलूस गणेशचन्द्र झा के नेतृत्व में निकला। इस जुलूस पर डी० एस० पी० और पुलिस इंसपेक्टर ने एक-एक करके सात बार फायर किया जिसमें अनेक घायल हुए और दो तो वहीं निश्चेष्ट होकर गिर गये। थाने में बैठे-बैठे गणेशचन्द्र झा ने देखा कि अकलू और गणेश को पुलिस वाले घसीटे थाने में ला रहे हैं। दोनों जब तक पानी-पानी, कराह-कराह कर मांग रहे थे। थोड़ी देर बाद दोनों ने गणेशचन्द्र झा के सामने दम तोड़ा।

चूँकि मधुबनी में रेलवे लाइन को ध्वस्त करने एवं स्कूलों में हड़ताल करने का निर्णय 9 अगस्त को ही लिया जा चुका था, बस इसलिये सरकार ने रेलवे को सुरक्षित घोषित कर दिया, जिससे रेलवे स्टेशन और रेलवे लाईन के पास लोग जमा नहीं हो सके।

दरभंगा, मधुबनी और समस्तीपुर में सन् 1942 की जनक्रान्ति इतनी सफल रही कि अगस्त के अन्त में सरकार ने नेताओं और उनके सहयोगियों को अनेक प्रकार से तंग करना आरंभ कर दिया। फुलपरास लौकहा-लौकही, खजौली, ताजपुर, पूसा, दलसिंहसराय, रोसड़ा आदि थानों के लोगों पर असह्य अत्याचार किये गये। अनेक लोगों को बर्बरता पूर्वक मारा-पीटा गया, उनके धारों में आग लगा दी गयी, स्त्रियों के जेवर उतार लिये गये, कितनों को जेल में बंद कर दिया गया और सिसवार निवासी तेज नारायण मिश्र जहाँ गोली लगने से भी नहीं बचे, वहीं करुणा पुल के पास विद्यानन्द भारती शहीद हो गये। ज्ञातव्य है कि इस पुल को अगस्त क्रान्ति के समय ध्वस्त किया गया था। मधुबनी और उसके आसपास के गाँव में भी गोलियाँ चलायी गयीं। जब जन आक्रोश इतना प्रबल था कि सिंगिया थाना के सहायक दरोगा सारंगी मियां को आन्दोलकारियों ने जान से मार डाला,

जिसका नेतृत्ववारी निवासी ताराकान्त झा एवं विश्वनाथ सिंह कर रहे थे। इसमें शमाड्योड़ी के श्री गजेन्द्र नारायण सिंह, श्री बालन प्रसाद सिंह, तथा श्री ब्रजमोहन प्रसाद सिंह का पूर्ण सक्रिय सहयोग था। प्रतिशोध की भावना में आकर जिला जज सैल्सबरी कलक्टर ब्राइसन और एम० पी० पिटाकर ने उनके दौलतपुर कोठो को लूट कर आग लगा दी।

सरिसव पाही के हरे मिश्र, शांतिनाथ झा, चेतनाथ झा एवं कुछ अन्य लोगों के घर जला दिये गये। सैल्सबरी ने कलुआही चौक से दक्षिण हरिपुर ग्राम के डीहटोल में भी गोलियाँ चलायीं। इसमें कई लोगों की जानें गयीं। और अनेक लोग आहत हुए। दो सुकुमार बच्चों ने सैल्सबरी के अत्याचार को चुनौती देकर स्वतंत्रता और मानवता का जयघोष किया। दोनों बच्चे हरिपुर के थे और इनके नाम क्रमशः शिव और नारायण थे। उनकी उम्र दस से बारह वर्षो की थी। ये दोनों बच्चे सड़क पर पुल के किनारे खड़े थे, पुलिस गाड़ी लेकर वहाँ पहुँच चुकी थी, बच्चों ने पुलिस को देखकर भय बिल्कुल ही प्रकट नहीं किया। पुलिस ने डाँट सुनाई- ''क्या कर रहे हो?''

''अंगरेजी राज्य का नाश'' शिव का उत्तर था।

इसी बात पर उसे गोली मार दी गयी। अपने साथी की स्थिति को देखकर नारायण ने जोर से आवाज लगायी-''इन्कलाव जिन्दाबाद''[10] इसपर उसे भी गोली मार दी गयी। परन्तु क्या क्रोधानलसे जलते हुए भारतीयों का मुँह स्वतंत्रता की ओर से मोड़ा जा सकता था। त्रिलोक नाथ हाई कलुआही के आगे अवस्थित शिव नारायण क्लब आज भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेनेवाले बच्चों की स्मृति दिला रहा है।[11] मधुबनी शहर में 22 अगस्त को सैनिकों ने गोली चलायी थी और इसके एक दिन पूर्व बहेड़ा कांग्रेस आश्रम में आग लगायी गयी थी। 26 अगस्त को देवधा और दीप में भी गोली चलायी और उसी दिन खजौली में हजारी लाल गुप्त एवं उनके साथियों को मार पड़ी थी। मधुबनी और जयनगर के बीच 23 अगस्त को अनेक लोगों के घर जला दिये गये थे। इसी खजौली में जयनन्द सिंह और नेमो ठाकुर शहीद हुए थे। सैनिकों ने इनपर भी गोलियां चलायी थीं।.

इतना होने पर भी मधुबनी अनुमंडल के थाने खजौली, बेनीपट्टी हरलाखी, लदनिया, जाले, बिरौल, फुलपरास, मधेपुर, झंझारपुर, बहेड़ा, सिधिंया आदि पर जनता का अधिकार बना रहा। लौकही थाना पर तो बहुत समय तक स्थानीय लोगों का आधिपत्य रहा। सैनिक भी वहाँ जाने से घबराते थे।

मधुबनी थाना को युवकों ने अपने अधीन रखने का प्रयास किया था। पुलिस द्वारा हस्तक्षेप करने पर 17 सितम्बर को लोगों ने दरोगा पर प्रहार किया था। दरोगा ने गोली चलायी थी, पर लोगों ने उसकी कोई परवाह नहीं की। बहेड़ा थाना में भी आन्दोलन का स्वरूप भयंकर था, वहाँ के लोग अपने क्षेत्र में पुलिस को जाने ही नहीं देते थे। 22 सितम्बर को उस थाने के गलमा ग्राम में गोली चली। पर इस प्रकार के दमन के बावजूद दरभंगा जिला क्रान्ति का केन्द्र बना रहा। 5 सितम्बर को तिरहुत प्रमण्डल के आयुक्त को दरभंगा के जिलाधिकारी ने सूचना दी थी कि जिले की स्थिति अत्यन्त गंभीर है और उसे शांत करना बहुत आसान नहीं है। उन्होंने राष्ट्रीय झंडा फहराने, कार्यालयों पर आक्रमण

करने आदि की चर्चा की थी। दरभंगा जिले में कई जगह स्वराजी गाड़ियां दौड़ी। मधुबनी, समस्तीपुर और रोसड़ा के विद्यार्थियों ने 10 अगस्त से ही बिना टिकट चढ़ना, जहाँ चाहें उतरना और क्रान्ति का बिगुल बजाना प्रारम्भ कर दिया था। चम्पारण के घोड़ासाहन से बेतिया तक आजाद ट्रेन दौड़ी। उसके संचालक थे उच्च शिक्षा प्राप्त अधिवक्ता और छात्र संघ के पदाधिकारीगण। समूची ट्रेन झंडे से सजी थी, नारों से गुंजती थीं। गार्ड और ड्राईवर साहब ''बन्दे मातरम्'' का जयघोष करते थे। चर्चिल ने भी सगर्व कहा था कि ''भारत में हुये उपद्रव को सरकार ने अपनी सारी शक्ति लगाकर कुचल डाला''[12] किन्तु चर्चिल की उपर्युक्त टिप्पणी चरितार्थ नहीं हो पायी थी। आन्दोलन पूर्णतया समाप्त नहीं हो सका था। वह अन्तर्मुखी होकर चालू था। अंगरेजी सरकार के भंयकर पैशाचिक दमन ने ऊपर से भारतीय के उत्साह एवं उमंग पर आवरण डाल दिया, पर उंनका असंतोष घटने के स्थान पर बढ़ता ही गया। बिहार के देशभक्त जिनमें शिक्षक, छात्र एवं जनसाधारण सभी समाविष्ट थे, कुछ काल के लिए नेपाल के तराई में चले गये। वहाँ की स्थानीय जनता ने सहानुभूति से उनका स्वागत किया। उनमें से अनेक विक्रमी वीरों ने वहाँ निवास कर बंदूक, कारतूस, तलवार, भाला तथा अन्यान्य शस्त्रात्रों को एकत्र किया और उनके उपयोग के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। मिथिला की सीमा नेपाल से संलग्न थी। अतः स्वतंत्रता के उपासकों को वहाँ जाकर शरण लेने में अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

हनुमाननगर जिला अन्तर्गत कोपलाड़ी, वरसाईन तथा उसके आसपास के कोशी नदी का दियारा क्षेत्र जो जंगल जैसा था, इनका प्रमुख कार्यस्थल बना। इन्हीं स्थानों से वे अपनी गतिविधि का निर्धारण करते थे तथा सीमावर्ती भारतीय क्षेत्र में अपना कार्य निष्पादन करते थे।

मिथिला के रामनन्दन मिश्र, योगेन्द्र शुक्ल, सूर्यनारायण सिंह, कुलानन्द सिंह आदि राष्ट्रीय संग्राम-योद्धा, जयप्रकाश नारायण तथा अन्यान्य प्रसिद्ध देश सेवी उस समय हजारीबाग जेल में बंद थे। राष्ट्र को उस आपत्ति की घड़ी में उन सबों ने येन-केन प्रकारेण बाहर निकलकर प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता संग्राम को चालू रखने तथा उसमें बल पहुँचाने का निश्चय किया। दीपावली की रात्रि में दिनांक 8 नवम्बर, 1942 ई० को जयप्रकाश नारायण, रामनन्दन मिश्र, योगेन्द्र शुक्ल, सूर्यनारायण सिंह, गुलाब सोनार तथा शालीग्राम सिंह आश्चर्यमय ढंग से बाहर चले आये। सरकार ने उन सबको पकड़ने के लिये ईनाम की घोषणा की। वे सब जंगल, चट्टान और कन्टकाकीर्ण प्रान्तर को पार करते हुए गया जिला की सीमा पर पहुँचे। देशभक्तों की वह टोली वहाँ दो भागों में विभक्त हो गयी। सूर्यनारायण सिंह, योगेन्द्र शुक्ल तथा गुलाब सोनार ने मिथिला के लिए प्रस्थान किया। गुप्त सूचना पाकर मुजफ्फरपुर के आरक्षी अधीक्षक ने योगेन्द्र शुक्ल को 7 दिसम्बर 1948 को अखाड़ा घाट पर गिरफ्तार कर लिया।[13] प्रारंभ में योगेन्द्र शुक्ल को पटना भेजा गया, परन्तु बाद में चलकर वहाँ से भी हटाकर उनको बक्सर के कारागृह में रखा गया। सूर्यनारायण सिंह तथा गुलाब सोनार दरभंगा की ओर चले गये और वहाँ गोपनीय रूप से आन्दोलन से संबंधित गुप्त कार्य करने में तल्लीन हो गये। जय प्रकाश नारायण

ने जनवरी, 1943 ई० में एक प्रपत्र प्रकाशित कर सभी प्रछन्न राष्ट्रीय कर्मियों को आदेश दिया कि वे सुदूर ग्रामों में प्रवेश कर ग्रामीणों, कृषकों तथा वहाँ के मजदूरों को संगठित करें। वे कारखानों, रेलवे के कार्यालयों, भारतीय सेना के आवासों एवं शिविरों तथा उसी प्रकार के अन्य स्थानों में पहुँचकर वहाँ के कर्मियों से सम्पर्क स्थापित करें एवं उनसबों का भी संगठन करें । उस प्रपत्र में यह स्पष्ट कर दिया था कि वह राष्ट्रीय आन्दोलन किसी षड्यंत्र का प्रतिफल नहीं है वरन् यह विदेशी शासन की जड़ को उखाड़ फेंकने हेतु सम्पूर्ण राष्ट्र का विद्रोह एवं क्रान्ति है। इसके लिए कार्यकर्त्ताओं को सुसंगठित एवं अनुशासित होकर शक्ति सम्पन्न करना परमावश्यक है।

इस छापामार बल को संगठित करने, बल प्रदान करने तथा भारत के अन्य राज्यों से सम्पर्क स्थापित करने एवं साधन और हथियार जुटाने में मदद पहुँचाने के लिये डा० राममनोहर लोहिया एवं अरुणा आसफ अली नेपाल आ गयी और आगे का कार्यकलाप स्थिर किया गया।

मिथिला की सीमा से संलग्न नेपाल की तराई में सूर्यनारायण सिंह[14] एवं अन्य साथियों के सहयोग से जयप्रकाश नारायण ने ''आजाद दस्ता'' का संगठन किया। देश के उद्धार के लिए छापामार सैनिकों का वह दल था। ब्रिटिश सरकार ने नेपाल सरकार द्वारा उन सबों को वहाँ पर भी 1943 ई० को मई में गिरफ्तार करा देने में सफलता प्राप्त कर ली। हनुमाननगर[15] जेल में उन्हें बंद किया गया, पर सूर्यनारायण सिंह एवं सरदार नित्यानन्द सिंह के मार्ग-दर्शन में वहाँ के कार्यकत्ताओं के बल ने उन सबों को शीघ्र बंदी गृह से मुक्त करा लिया। नित्यानन्द सिंह, सूर्यनारायण सिंह के साथी थे तथा भारतीय आंदोलनकारियों के नेपाल शिविर के प्रधान प्रशिक्षक सोनवर्षा[16] में उन्होंने मातृभूमि के उद्धार के लिए कार्य करते हुए वीरगति प्राप्त की थी।

नेपाल प्रवास के क्रम में इन स्वतंत्रता सेनानियों को कोइलारी ग्राम के श्री जय मंगल प्रसाद सिंह उर्फ जंगली बाबू तथा श्री चतुरानन्द प्रसाद सिंह ने न सिर्फ सहयोग दिया बल्कि कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। राजद्रोह के अभियोग में नेपाल सरकार ने इन्हें हवा भी खिलायी। बरसाईन के श्री रामेश्वर प्रसाद सिंह की सारी सम्पत्ति इनलोगों के साथ सक्रिय सहयोग करने के कारण जब्त कर ली गयीं जो पचीसों वर्ष बाद तक नेपाल सरकार के कब्जे में रही। भारत के आजाद होने के उपरांत भी वर्षों बाद तक वे अपनी सम्पत्ति से वंचित रहे।

आजाद दस्ता, फारवर्ड ब्लाक, कांग्रेस सोशलिस्ट आदि क्रान्तिकारी संगठनों को कार्यवाहियों के अतिरिक्त जेल यात्रा करने से बचे हुए कांग्रेस कर्मी गांधीजी तथा कांग्रेस द्वारा पूर्व निर्देशित निर्माण कार्य चुपचाप शांतिपूर्वक करते रहे, उन सबों ने भावी राष्ट्रीय संघर्ष के लिए जनता में उत्साह एवं उत्सुकता को अपनी संलग्नता एवं कार्यों द्वारा जीवित रखा।

स्वातंत्र्य पूर्व मिथिला के मधुबनी की धरती ने बौद्धिक चिन्तन को चेतना की परिधि से निकलकर सहिष्णुता एवं असीम धैर्य की लक्ष्मण रेखा को पार कर संघर्ष की चेतना को अंगीकार कर इनक्लाब के धनुप से जिन्दाबाद की तीर को फेंका। इस मिट्टी के सपूतों

ने भी स्वातंत्र्य देवी व चरणों में अनेक शीश के सुमन अर्पित किये।

टिप्पणी एवं संदर्भ ग्रन्थ

1. डा० डी० एन० सिंह, **मिथिला में स्वातंत्र्य आन्दोलन का उद्भव और विकास** पृष्ठ-139-40
2. दिनेश चन्द्र झा, **स्वतंत्रता संग्राम और मिथिलांचल**, पृ०-45
3. विहार का एक जिला, जिसकी घोषणा 1972 में स्व० केदार पाण्डेय के मुख्य-मंत्रित्व काल में की गयी पूर्व में दरभंगा जिला का एक अनुमंडल।
4. इस महाविद्यालय के संस्थापक बावू चन्द्रधारी सिंह, रॉटी डयोढ़ी (मधुबनी) थे।
5. बलदेव नारायण, **अगस्त क्रान्ति**, पृ०-56
6. वर्त्तमान में इसका नाम लंगट सिंह कॉलेज है।
7. डा० सीताराम झा 'श्याम', **भारतीयस्वातंत्र्य संग्राम की रूपरेखा** पृ०-189
8. बलदेव नारायण, **अगस्त क्रान्ति**, पृ० 63
9. मधुबनी जिला का वर्त्तमान में एक अनुमंडल ।
10. डा० सीताराम झा ''श्याम'', **भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम की रूपरेखा**, पृ०-191
11. डा० सीताराम झा ''श्याम'', **भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम की रूपरेखा**, पृ०-192-93
12. डा० राम प्रकाश शर्मा, **मिथिला का इतिहास**, पृ०-594
13. डा० राम प्रकाश शर्मा, **मिथिला का इतिहास**, पृ०-595
14. क्रान्तिकारी समाजवादी स्वतंत्रता सेनानियों जिनके कंधों पर किसानों-मजदूरों का भी नेतृत्व था, ग्राम + पोस्ट-नरपतिनगर, जिला-मधुबनी ।
15. नेपाल राष्ट्र का पूर्व जिला जो अव सप्तरी कहलाता है और जिसका मुख्यालय राजबिराज है ।
16. सहरसा जिला का अंग ।

REGION IN HISTORY
Perspectivising Bihar

Edited by
Ratneshwar Mishra
Professor & Head
Department of History
L. N. Mithila University, Darbhanga

JANAKI PRAKASHAN
PATNA NEW DELHI

Ist Published 2002

© Department of History, Lalit Narayan Mithila University

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical including photocopying, recording or by any information, storage and retrieval system without permission in writing from the editor.

Published by :
NAND KISHOR SINGH
JANAKI PRAKASHAN
Ashok Rajpath, Chauhatta
Patna-800 004

Also at :
1979, Ganj Mirkhan
Daryaganj,
New Delhi - 110 002

Photo Composing by :
J. M. COMPUTERS
West Lohanipur
Kadam Kuan, Patna-3